

POST GRADUATE CERTIFICATE IN
BANGLA-HINDI TRANSLATION
PROGRAMME (PGCBHT)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2018

एम.टी.टी.-002 : बांग्ला-हिन्दी अनुवाद : तुलना और
पुनःसृजन

समय : 3 घण्टे

अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 300 शब्दों में लिखिए : 2x10=20
 - (a) हिंदी एवं बांग्ला में वर्णगत समानता तथा अंतर को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
 - (b) बांग्ला के उच्चारणगत वैशिष्ट्य से जुड़ी समस्याओं पर प्रकाश डालिए।
 - (c) बांग्ला को एक व्यवस्थित भाषा का रूप देने में ईश्वरचंद्र विद्यासागर का क्या योगदान है, सोदाहरण बताइए।

2. निम्नलिखित बांग्ला पदों/शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए : 5

घोमटा, शतखड़ी, मुखे कुलूप, ग्राम-खरचा, गिडलि,
बेदाना, चाबवास, दावा, पांजाबी, जिनिमपत्र।

3. निम्नलिखित हिंदी पदों/शब्दों के बांग्ला पर्याय लिखिए : 5
दादाजी, माहौल, गृहस्थी, आपसी संपर्क, रिश्तेदार, इसके अलावा,
गायब, पिछड़े, पतंग, जलावन

4. निम्नलिखित कहावतों/मुहावरों में से किन्हीं पाँच का हिंदी अनुवाद करते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 5x3=15

- सोजा आङ्गुले घि ओठे ना
- राथे हरि मारे के
- गेघ ना चाइतेई जल
- एति दर्पे हत लङ्का
- उत्तम मध्यम देओया
- एका ना बोका
- यार जन्य करि चुरि सेई बले चोर
- हातिर मुखे दूर्बा घास
- घोला जले माछ धरा
- बाड़ि माथाय करा

5. निम्नलिखित अंशों में से किन्हीं तीन का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 3x15=45

- বাংলার উন্নয়ন আমাদের সবার স্বপ্ন, নতুন প্রজন্মের স্বপ্ন, তাই আমাদের সবাই এই স্বপ্নকে বাস্তবায়িত করতে উন্নয়নের যজ্ঞই আমাদের ধ্যান এবং বাসনা হওয়া উচিত। আমাদের মধ্যে রাজনৈতিক মতবিরোধ থাকবে, থাকবে আদর্শের সংঘাত, কিন্তু সেই মতানৈক্য বা মতাদর্শগত সংঘাত

যেন কখনই উন্নয়নের কর্মসূচিতে ভাটা না আনে, কেউ কেউ কিছু করতে পারেননি বলে অন্য অনেকেই পারবেন না-এই মানসিকতা যেন আমাদের মধ্যে না থাকে। বাংলায় অনেক সুযোগ, অনেক মেধা, অনেক সম্ভাবনা থাকা সত্ত্বেও সেই সুযোগের সদ্ব্যবহার অনেকদিন ধরেই বন্ধ, কিন্তু ভবিষ্যতেও যে সুযোগের সদ্ব্যবহার করা যাবে না- এই যুক্তি আমি মানতে নারাজ। এই ক' বছরে পশ্চিমবঙ্গের বিভিন্ন জেলায় আমি গিয়েছি, হাজার হাজার কিলোমিটার অতিক্রম করেছি। দেখেছি গ্রামবাংলার বিস্তীর্ণ সবুজ ধানখেতের পাশাপাশি বহু জায়গা আছে, যেখানে অনেক পর্যটন কেন্দ্র গড়ে তোলা যায়। আবার মুর্শিদাবাদ, নদীয়া, বর্ধমানের একটা ব্যাপক অঞ্চল জুড়ে তাঁতশিল্প, কুটিরশিল্প সেখানকার মানুষকে আশার আলো দেখাতে পারে। গোটা উত্তরবঙ্গ, বাঁকুড়া, বীরভূম, পুরুলিয়া শুধু বঞ্চনার শিকার দীর্ঘদিন ধরেই।

- (b) শূন্য অফিসে মিস্টার সত্যামূর্তির প্রত্যাবর্তনের জন্যে অপেক্ষা করে-করে নিজের কোষ্ঠির কথাও মনে পড়লো আদিনাথের। যশোহরের বাড়িতে একটা কোষ্ঠী ছিল আদিনাথের-কিন্তু সেটা সঙ্গে নিয়ে আসতে পারেননি। ওই বিপদের সময় কেউ-কেউ বলেছিল, এত ভয় পাবার কী ছিল? যশোহরের মানুষ সাম্প্রদায়িক নয়, নোয়াখালির সঙ্গে অনেক তফাৎ ওই জেলার। কথাটা সত্য না মিথ্যা তা যাচাই করার সাহস মেলেনি। মানুষ যখন হিংসায় মত্ত হয়ে ওঠে তখন কী যে হয়, সেই সময় কোনো কিছু ঝুঁকি নেবার সময় থাকে না। অক্ষয় সরকার তো বলতেন,

‘আমি মাস্টার মানুষ-আমার শত্রু নেই।’ যশোহরে তিনি থেকেও গেলেন-কিন্তু কলকাতার বৈঠকখানা রোডের মত্ততা থেকে অক্ষয় সরকার মুক্তি পেলেন না। যেখানে প্রাণ নিয়ে টানাটানি সেখানে মানুষকে বিশ্বাস করার চেয়ে অবিশ্বাস করাই নিরাপদ।

এখানে অনেকদিন পরে স্ত্রী সুরবালা আদিনাথের একটা ছক করিয়ে ছিলেন। সেখানে পরিষ্কার লেখা ছিল, জাতক সৌভাগ্যবান, যা প্রাপ্য তার থেকে বঞ্চিত হবেন না, কিন্তু বারবার প্রচেষ্টার পরে তা মিলবে।

- (c) মাদার টেরিজার আধ্যাত্মিক প্রকৃতি যেভাবে বিকশিত হয়ে উঠল, এবং তাঁর পরিবেশ যে সাদা জানাল তাঁর অন্তরে, তার ফলে “পবিত্রতা, দারিদ্র্য এবং আজ্ঞানুবর্তিতা”র তিনটি অঙ্গীকারের অতিরিক্ত আরও কিছুর প্রয়োজন হল। ওই তিনটি অঙ্গীকারের প্রতি সম্পূর্ণ সম্মতি তো থাকলেই, তার সঙ্গে তিনি আরেকটি, চতুর্থ শপথ গ্রহণ করলেন : দীনতম দরিদ্রের অকুণ্ঠ এবং সর্বস্তঃকরণ সেবা”।

‘সিস্টার্স অব চ্যারিটি’র অঙ্গীকার, পরিশ্রম যতই কঠোর হোক না কেন, সেদিকে ভ্রক্ষেপ না করে, হাসিমুখে, যাঁরা রোগাক্রান্ত, যারা মুমূর্ষু, যাদের ভালবাসার কেউ নেই, যারা সমাজ-পরিত্যক্ত তাদের, কুষ্ঠরোগীদের, জীবনে সব আশা, সব বিশ্বাস যারা হারিয়েছে তাদের তাঁরা খাদ্য, বস্ত্র, আশ্রয় যোগাবেন, সেবা-যত্ন করবেন, শুধু বাস্তবিক অর্থে নয়, অ্যাধ্যাত্মিক অর্থেও তাদের ভাল-মন্দের ভার নেবেন। যে সহায় সম্বলহীন রাস্তায় পড়ে আছে, তার কাছে পৌঁছতে হবে, এবং কনভেন্ট-এর

চার-দেওয়ালের মধ্যে থেকে তা সম্ভব নয় কখনওই, এই চতুর্থ অঙ্গীকারটিকে সিঁটারেরা বলেন, “আমাদের পথ”।

- (d) “আমরা সবাই তো স্টপার ঘোষদা, কেউ মাঠের মধ্যে, কেউ মাঠের বাইরে, ঠেকাচ্ছি আর ঠেকাচ্ছি। এটাও ঠেকালাম-লোভকে, ঘুষ দেবার প্রস্তাব নিয়ে এসেছিল লোকটা। কাল ওদের টিমের সঙ্গে খেলা। আমাদের মজুমদার সাহেবের টিম। এ বছর লীগ চ্যাম্পিয়ন হবার জন্য খেলছে, ভালই খেলছে, হয়তো হয়েও যাবে। কিন্তু চ্যাম্পিয়ন হবার পথে যাতে একটিও কাঁটা না থাকে সেই ব্যবস্থা করতে এসেছিল, আমাকে ওরা একটা কাঁটা ভাবে।”

“ঘুষ দিয়ে ? না না মশাই, কাল আপনি ভাল করে খেলুন, দারুণ খেলুন। আচ্ছা করে। জব্দ করে দিন।”

কমল দেখল, বিপুল ঘোষের সারা মুখ আন্তরিকতায় কোমল ও উজ্জ্বল।

“কাল অফিসে আসছেন তো ?” দূর থেকে রণেন দাস প্রশ্ন করল।

“কেন ?” কমল সচকিত হয়ে বলল।

“সেটা আপনি ভালই জানেন, তবে বলে রাখছি, পাঁচটার আগে আপনাকে আমি ছাড়তে পারব না।”

“জানি আমি, তবে কাল আমি ক্যাজুয়াল নিচ্ছি।”

- (e) সে যুগটা ছিল রাজতন্ত্রের যুগ। রাজা ছিলেন রাষ্ট্রের সর্বময় কর্তা এবং প্রজাদের আধ্যাত্ম গুরু অর্থাৎ পরম সত্যের প্রধান পথদ্রষ্টা। এই নিয়ম বহুকাল

ধরে চলে আসছিল। একদিন এক কবি সর্বপ্রথম এই নিয়মের প্রতিবাদ করলেন। কবি একদিন সদর্পে প্রচার করলেন, রাজা রাষ্ট্রের সর্বময় কর্তা হলেও, মানুষের আধ্যাত্ম জীবনের প্রতি তাঁর কোন কর্তৃত্ব নেই। সঙ্গে সঙ্গে তাঁকে রাজদ্রোহিতার অপরাধে অভিযুক্ত করা হলো। বিচারে রাজা তাঁকে মৃত্যুদণ্ড দিলেন। কবির নাম, টমাস মুর (১৪৭৮-১৫৩৫)। কবির জন্মস্থান, আয়ারল্যান্ড। ‘ইউটোপিয়া’ গ্রন্থটি রচনা করে তিনি কাব্যজগতে শ্রেষ্ঠ মর্যাদার আসনে প্রতিষ্ঠিত হয়েছিলেন। কবির মৃত্যু বরণের দৃশ্যটি অদ্ভুদ। চোখে মুখে এতটুকু চাঞ্চল্য নেই, যেন শান্ত দান্ত এক নিবিষ্টকার পুরুষ। গিলটিনে তাঁর গলাটি জল্লাদ একসময় বসিয়ে দিল, তিনি নির্বিকার ভঙ্গীতে বলে উঠলেন, ‘আহা, আমার হাত দুটো পেছন দিকে বেঁধে রেখেছ কেন? আমাকে বলি দেবার আগে দড়িটাকে অন্তত রেহাই দিতে পারতে। ও বেচারী তো রাজার কাছে কোনো দোষ করেনি।’ শেষ কথাটির কোনো উত্তর পাননি কবি। কথাটি বলার সঙ্গে সঙ্গে তাঁর শিরচ্ছেদ করা হয়েছিল।.....

6. নিম্নলিখিত অংশों में से किसी एक का बांग्ला में अनुवाद कीजिए : 1x10=10
- (a) छत्तीसगढ़ में निवास करनेवाली राउत जाति में ‘बाँस’ नामक लोकवाद्य के साथ कथा-गायन प्रचलित है, जिसका राउत समाज में विशिष्ट सांस्कृतिक महत्त्व है। ‘बाँस’ एक प्राचीनतम सुषिर लोकवाद्य है, जिसे आदिम वाद्ययंत्र भी कहा जा सकता है। ‘बाँस’ के साथ कथा-गायन को ‘बाँस-गीत’ कहा जाता है। ‘बाँस’ की ध्वनि गंभीर व

बुलंद होती है, जिसमें रंजकता व कर्णप्रियता का अभाव परिलक्षित होता है, किन्तु कथानक के करुण प्रसंग जहाँ 'बाँस' की करुणा से साकार हो उठते हैं, वहीं वीर एवं रौद्र रसों की अनुभूति कराने में उसका गर्जनामय घोष सहायक होता है।

'बाँस-गीत' के अंतर्गत 'चदैनी' का गायन किया जाता है, जिसे राउत-गायक 'लोरिक-चंदा' के नाम से अभिहित करते हैं। 'बाँस' का वादन गायन से पूर्व तथा मध्य में होता है, जो गायक को स्वराधार देता है और इससे गायक के कंठ को थोड़ा विश्राम भी मिल जाता है।

- (b) पिलानी में रहते रामनिवास जाजू को एक विचित्र प्रसंग से दो-चार होना पड़ा था। इनकी अकादमिक प्रतिभा तथा साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने की कीर्ति निकटवर्ती नगरों के कॉलेजों में भी पहुँचने लगी थी। नवलगढ़-स्थित पोद्दार कॉलेज के प्रिंसिपल ने यह सब सुना, तो उनके मन में आया की ऐसा छात्र हमारे कॉलेज की शान हो सकता है, उन्हें यह जानकारी भी मिल गई थी कि रामनिवास की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। लिहाजा उन्होंने रामनिवास को कई तरह के आर्थिक प्रलोभन देकर अपने कॉलेज में बुला लिया। बिरला कॉलेज के अधिकारियों को इससे न सिर्फ एक अत्यंत प्रतिभाशाली छात्र खो देने का दुख हुआ बल्कि यह बात उन्हें अपने लिए अपमानजनक भी लगी। नतीजतन उन्होंने रामनिवास को वापस बुलाने के लिए इनके सामने नवलगढ़ के मुकाबले दुगुने आर्थिक प्रलोभनों का प्रस्ताव रखा और ये वापस अपने 'घर' लौट आए।